32.0 रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सामाजिक विचारधारा

- डा0 रश्मि श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, महिला विद्यालय डिग्री कालेज, लखनऊ
  Email- rashmisrivastav.2000@gmail.com

शोध-सार

रविंद्रनाथ ठाकुर ने समाज व सामाजिक व्यवस्थापन के सम्बन्ध में भी दिशा निर्देश दिये। समाज के दुर्बल, वंचित व निर्धन वर्ग के उत्थान के लिए उनकी संवेदनशीलता समय-समय पर मुखरित होती रही। रवीन्द्रनाथ वर्तमान समय की सामाजिक समस्याओं को अर्थशास्त्र व उपयोगितावाद के संकीर्ण दृष्टिकोण में नहीं देखते। इन सामाजिक समस्याओं पर विचार करने में वे अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए उसे उच्चतम आदर्श स्तर तक उठा देते हैं। सामाजिक जीवन के व्यवस्थित, प्रभावपूर्ण संयोजन और एक सुखी व सम्पन्न समाज के लिए उन्होंने शिक्षा को भी बहुत महत्वपूर्ण माना। उनका मानना था कि शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जो समाज को सभ्य, सुसंस्कृत, स्वस्थ्य व आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर सकता है। यही कारण है कि शांतिनिकेतन जैसी संस्थान को स्थापित कर उन्होंने हमारे सामने एक उत्कृष्ट शैक्षिक संस्थान का आदर्श प्रस्तुत किया। शांतिनिकेतन के तमाम विद्यार्थी व शिक्षक सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे। उन्होंने तमाम समाजोपयोगी कार्य भी किये।

मुख्य शब्द– *व्यवस्थापन, रूढ़िगत ,सहकारिता, ग्रामोन्नति, रोजगारोन्मुख*

भूमिका

एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मानव जाति के जीवन के व्यवस्थापन में समाज की अपनी महत्ता है। परिवार के बाहर समाज में व्यक्तियों के बीच एक तरह की अन्तःनिर्भरता रहती है, समाज का एक सदस्य अन्य दूसरे सदस्य पर किसी न किसी प्रकार निर्भर होता है, एक सदस्य दूसरे सदस्य का सहायक होने के साथ-साथ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में किसी न किसी प्रकार एक दूसरे को प्रभावित करता है। हम अपने रोजमर्रा के जीवन में रोज की जरूरतों को पूरा करने में अपने सामाजिक ढांचे पर निर्भर हैं। कृषक द्वारा उत्पादित अनाज दुकानों तक पहुंच हमारे घरों तक उपलब्ध हो, इस छोटी सी व्यवस्था का पूरा का पूरा अपना ढांचा है। हमारे बच्चे व्यवस्थित रूप में स्कूलों तक जा अपनी पढ़ाई पूरी कर किसी संस्थान द्वारा मान्यता प्राप्त डिग्री प्राप्त कर रहे है, इसका भी अपना एक व्यवस्थित ढांचा है। सही-गलत के निर्णय के लिए न्याय की भी अपनी संगठनात्मक संरचनाएं, रूपये-पैसे के लेन-देन, अर्थतन्त्र की व्यवस्थित संरक्षित ढांचागत व्यवस्थाएं, हमारी संस्कृति, नीति-नियम, मान्यताएं, रीति-रिवाज आदि बहुत कुछ सामाजिक संरचना का हिस्सा ही तो है। इनमें से समाज के किसी भी अंग में उत्पन्न विकृति, सीधे-सीधे हमारे जीवन को प्रभावित करती है। ठाकुर ने समाज वा सामाजिक व्यवस्थापन के सम्बन्ध में भी दिशा निर्देश दिये। समाज के दुर्बल, वंचित वा निर्धन वर्ग के उत्थान के लिए उनकी संवेदनशीलता समय-समय पर मुखारित होती रही । भारतीय समाज को रेखांकित कर उन्होंने कहा- "हमारे दैनिक व्यवहार में, हिन्दू धर्म मात्र एक जीवन पद्धति है, और चाहे इसका दार्शनिक और सांस्कृतिक आधार कितना ही महान क्यों न हो, लेकिन इसके नाम पर जो सामाजिक अन्याय युगों से होते आए हैं उनकी क्षतिपूर्ति इससे नहीं हो पाएगी। हमारा धर्म समाज को छोटे-छोटे समूहों में बांटता है और जो सबसे निचले स्तर पर हैं उन्हें न केवल सामाजिक न्याय से वंचित किया जाता है बल्कि उन्हें मनुष्य से बद्तर होंने का अहसास निरंतर कराया जाता है।" इस विचार की स्वीकृति के साथ रवीन्द्रनाथ सामाजिक एकता व सामाजिक समानता के पोषक रहे। जातिवाद के विरोधी रहे।

रवीन्द्रनाथ वर्तमान समय की सामाजिक समस्याओं को अर्थशास्त्र व उपयोगितावाद के संकीर्ण दृष्टिकोण में नहीं देखते। इन सामाजिक समस्याओं पर विचार करने में वे अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए उसे उच्चतम आदर्श स्तर तक उठा देते हैं। वे इस प्रवृत्ति को जन्म, आदत व प्रशिक्षण के संयोग पर नहीं बल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखते थे, उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी केन्द्रीय सिद्धान्त पर समर्पित कर दिया। यदि लोग जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण रखते हुए मनुष्य की दिव्यता के

प्रति आदर भाव विकसित करें तो मौजूदा सामाजिक अशांति समाप्त हो जाएगी। ''मानवतावाद के उत्कर्ष और धर्म द्वारा प्रस्तावित आधारों को भी उन्होंने चुनौती दी। वे ईश्वर को जहां सूर्य के प्रकाश में देखते है वहीं उसे अस्पृश्यों के हृदय में भी। सामाजिक समानता और समरसता के समर्थन में अस्पृश्यता का विरोध करते हुए उन्होंने लिखा भी था ''वे अस्पृश्य हैं, पवित्र मंत्र से अनाभिषिक्त धर्म के ठेकेदार उन्हें मंदिर के द्वार से बाहर रखते थे। लेकिन मैं एक कवि हूं-मैं उनके समुदाय का हूं, मेरी कोई जाति नहीं, कोई पवित्र मंत्र नहीं मेरे फूल उस देवता तक नहीं पहुंचते जो उनके मन्दिर में कैद है।"

रूस की यात्रा के अपने संस्मरण 'रूस की चिट्ठी' में वे लिखते हैं -''हमेशा देखा गया है कि मनुष्य की सभ्यता अप्रसिद्ध लोगों का ऐसा दल होता है, जिनकी संख्या तो अधिक होती है, फिर भी वे द्वितीयक होते हैं, उन्हें मनुष्य बनने का अवकाश नहीं, देश की सम्पत्ति में उनकी हिस्सेदारी न्यून होती है। वे सबसे कम खाकर, सबसे कम पहनकर, सबसे कम सीखकर अन्य सबों की परिचर्या या गुलामी करते हैं, सबसे अधिक उन्हीं का परिश्रम होता है। सबसे अधिक उन्हीं का असम्मान होता है। जीवन यात्रा के लिए जितनी भी सुविधाएं और मौके है उन सबसे वे वंचित रहते है।" सामाजिक सुधार कार्यों के लिए उन्होंने रूढ़िगत परम्पराओं की अनदेखी करने की भी वकालत की ''भारत के गौरवशाली इतिहास को जानते हुए उनका विरोध इस बात के लिए था कि केवल अंधविश्वास से उनका पालन नहीं किया जाए। अर्वाचीन भारत के बारे में उनके मन में गर्व की भावना थी। परंपरा के नाम पर पुराने जमाने से चली आ रही रूढ़ियों की उन्होंने कड़ी आलोचना की।"

सामाजिक जीवन की सर्वाधिक बुनियादी प्रक्रिया सहयोग है। इसमें व्यवधान तमाम समस्याओं को जन्म देती है। समाज के सभी सदस्य ना तो एक जैसे होते है और ना ही एक जैसे किये जा सकते है। रूचि, अरूचि, बुद्धि-ताकत, स्वस्थ, सोचने-समझने के नजरिये आदि तमाम ऐसे आधार है जिनसे वे एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वस्तुतः एक की समझ द्वितीय के साथ उसके सम्बन्ध की निर्धारक है। समाज के विभिन्न लोगों, वर्ग, समुदाय आदि में वैचारिक भिन्नता, सहमति, असहमति सहज है यह बनी ही रहेगी। हमें ध्यान यह रखना है कि शिक्षा के माध्यम से, आपसी सहयोग और सामान्जस्य के माध्यम से इन सबके बीच समरसता बनाए रखी जाए। जो कि मानवतावादी मूल्यों की स्वीकृति से बड़ी सहजता से प्राप्त की जा सकती है। एक मनुष्य के नाते हम दूसरे मनुष्य के सहयोगी, उसके हितों के प्रति सजग रहें तो जटिलता उत्पन्न ना होगी। यहां वे मानवता को सबसे ऊंचा दर्जा देते हुए कहते हैं- मानवता पर मेरा सबसे अधिक विश्वास है। "I have great faith in humanity. Like the sun it can be clouded, but never extinguished. I admit that when the human races have met together as never before, the baser elements appear predominant. For men to come near to one another and yet to continue to ignore the claims of humanity is a sure process of humanity. We are waiting for the time when the spirit of the age will be incarnated in a complete human truth and meeting of man will be translated with the unity of mankind."

उन्होंने कहा भी – "जिस मनुष्य का मनुष्य सम्मान नहीं कर सकता, उस मनुष्य का मनुष्य उपकार करने में असमर्थ है और कहीं नहीं तो, जब अपने स्वार्थ पर आकर ठेस लगती है, तभी मार-काट शुरू हो जाती है। रूस में एक दम जड़ से लेकर इस समस्याओं को हल करने की कोशिश की जा रही है। उसका अन्तिम परिणाम क्या होगा, इस बात पर विचार करने का समय अभी नहीं आया, मगर फिलहाल जो कुछ आंखों के सामने से गुजर रहा है, उसे देखकर आश्चर्य होता है।"

उनका स्पष्ट मानना था कि "जिस समाज में सबके साथ एक जैसा व्यवहार किया जायेगा वही समाज एकजुट और सबल रहेगा। जिसका अपमान होता है वह समाज से दूर जाता है। शरणार्थी बनता है और कई बार पराए लोगों के प्रतिस्पर्धियों के हित शत्रुओं के हाथ का खिलौना बन कर परिवार, समाज या देश के नाश का कारण बनता है। इतिहास इसका गवाह है। लेकिन इतिहास की इन गवाहियों को नजरअंदाज करते हुए हमारा अन्यायकारी और अविवेकपूर्ण बरताव जारी है।'' विश्व में जहां परिपूर्ण संतुलन होता है, वहां सुन्दरता की प्राप्ति होती है और सत्य तो वैश्विक मन का परिपूर्ण आंकलन होता है। हम सब सत्य का सामना

करते हैं, अपनी गलतियों के कारण, बड़ी गलतियों से इकट्ठा होंने वाले अनुभवों से, उससे जागृत हुयी मानसिक जागृति में हम सत्य का सामना करते है। इसके अलावा सत्य का आंकलन और हो भी कैसे ? विकास के नाम पर केवल संख्यात्मक बढ़ोत्तरी दिखाने के बजाए सम्यक विकास की ओर ध्यान दिया जाए यह उनकी राय थी। कारखानों की वजह से शहरों में जनसंख्या बढ़ने लगी और गांव खाली हो गये। हर हाथ के लिए काम और हर खेत में पानी, इस विचार को प्रत्यक्ष उतारने के लिए रवीन्द्रनाथ नें तमाम उपाय सुझाए। शहरी जीवन में पले-बढ़े होंने के बावजूद ग्रामीण जीवन से उनका सीधा सम्बन्ध था, वयस्क रवीन्द्रनाथ पुश्तैनी जायदाद की देखरेख के लिए ग्रामीणों के सम्पर्क में भी रहा करते थे अतः ग्रामीण जीवन की समस्या को वे करीब से देख पा रहे थे। भारतीय समाज को खुशहाल बनाने का एक बड़ा मन्त्र उन्होंने यहीं दिया कि भारत के गांवों को विकसित करो, समृद्ध करो, शिक्षित करो, रोजगारोन्मुख करो, भारत स्वतः खुशहाल हो उठेगा। ‘‘समाज से जुड़े होंने के अहसास से जन्में सामाजिक हित के भाव के साथ महात्मा गांधी ने विकास का, जो गांव की ओर चलो मार्ग बताया था वही मार्ग रवीन्द्रनाथ ने उनसे बहुत पहले ही बताया।"

अपने अमेरिकी मित्र एल्महर्स्ट, जिन्होंने कृषि से सम्बन्धित शिक्षा ग्रहण की थी, उन्हें ठाकुर ने भारत आने का न्योता दिया। एल्महर्स्ट उनके निमन्त्रण को स्वीकार कर भारत भी आए और श्रीनिकेतन के कामों में मददगार भी हुए। उन्होंने रवीन्द्रनाथ के सामाजिक कार्यों में भी हाथ बंटाया। गांवों में समुदायिक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत लोगों को कृषि से सम्बन्धित नई-नई जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें आर्थिक लाभ पहुंचाने के काम भी किये गये। टैगोर ने ग्रामीण जीवन के लिए सहकारिता कार्यक्रम को महत्वपूर्ण माना था। उन्होंने कहा भी- मेरा विश्वास है कि सहकारिता द्वारा ही हमारे गांव अपनी सर्वांगीण शक्ति को उन्मुख कर सकेंगे। शिकायत तो इसी बात की है आज तक बंगाल में सहकारिता केवल रूपया उधार तक ही सीमित रही है। महाजन की ग्राम्यता को हां उसने कुछ संशोधन करके स्वीकार किया है। सम्मिलित प्रयास से जीविका उत्पादन और उपभोग करने के लिए सहकारिता ने कुछ नहीं किया। शांतिनिकेतन के विद्यार्थियों को भी उन्होंने ग्रामोन्नति के प्रयासों में सम्मिलित किया। इसमें अतुल सेन जैसे अध्यापक भी सामने आए। सेन के संरक्षण में कर्मचारियों का एक संगठन बना। संगठन ने सियालदह से अपना काम शुरू भी किया। काम को गति और सफलता भी मिली। यद्यपि आगे चलकर इसमें कुछ व्यवधान उत्पन्न हो गया। रवीन्द्रनाथ के आग्रह पर उनके पुत्र रथीन्द्रनाथ भी उनके सामाजिक कार्यों में सहयोगी रहे। आधुनिक खेती के तरीकों के इस्तेमाल पर भी कार्य हुआ। रवीन्द्रनाथ ने कहा भी - हमारे देश में गांव-गांव में धनोत्पादन और धन-परिचालन के कार्य में सहकारिता की विजय हो, यही मेरी कामना है।

सामाजिक जीवन के व्यवस्थित, प्रभावपूर्ण संयोजन और एक सुखी व सम्पन्न समाज के लिए शिक्षा को भी बहुत महत्वपूर्ण माना। उनका मानना था कि शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जो समाज को सभ्य, सुसंस्कृत, स्वस्थ्य व आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर सकता है। यही कारण है कि शांतिनिकेतन जैसी संस्थान को स्थापित कर उन्होंने हमारे सामने एक उत्कृष्ट शैक्षिक संस्थान का आदर्श प्रस्तुत किया। शांतिनिकेतन के तमाम विद्यार्थी व शिक्षक सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे। उन्होंने तमाम समाजोपयोगी कार्य भी किये। "रवीन्द्रनाथ की धारणा थी कि व्यक्ति अगर सुखी हो तो समाज सुखी होता है, समाज सुखी हो तो देश सुखी होता है। व्यक्तियों को जोड़कर उनके मन में सामाजिक भाव जगाने का काम रवीन्द्रनाथ ने किया। वे मानते थे कि व्यक्ति और समष्टि में भेद नहीं बल्कि उन्हें अलग करना मानवता धर्म के अनुसार नहीं।" और यहीं वे कल्पना करते हैं एक सुन्दर भविष्य का, जहां सभी स्वस्थ्य और शिक्षित हों, बराबरी के दर्जे पर सुखी और प्रसन्न हों

निष्कर्ष

रवींद्रनाथ टैगोर की सामाजिक विचारधारा आज भी प्रासंगिक है। उनके विचार केवल आदर्शवादी नहीं थे, बल्कि वे समाज को उत्कृष्ट बनाने के लिए व्यावहारिक दिशा-निर्देश भी प्रदान करते हैं। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर जागरूकता, शिक्षा और नैतिकता के माध्यम से हम एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं। उनकी

सामाजिक विचारधारा एक ऐसे समाज का सपना दिखाती है जो न केवल भौतिक प्रगति करे, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध हो। उनके यह विचार हमे संसार को एक उन्नत स्थान बनाने के लिए प्रेरणा देते है, जहाँ सभी मनुष्य बराबर हो और एक-दूसरे से कोई बैर न हो

सन्दर्भ-

जाधव, न. (2017). विश्वमानव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 85.

जाधव, न. (2017). विश्वमानव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पूर्व सन्दर्भित, पृ. 86.

राधाकृष्णन, डॉ.एस. (2017). रवीन्द्रनाथ ठाकुर का दर्शन, (नि. माथुर अनु.), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 119.

उद्धृत, कृ. कृ. (2016). रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक जीवनी, (र. साहा अनु.), दसवीं आवृत्ति, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, दिल्ली, पृ. 230.

भट्टाचार्य स.,(सं.)(2011). महात्मा और कवि, (ता. गिरि अनु.). छठी आवृत्ति, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नई दिल्ली, पृ.205.

टैगोर र. (1970). लेक्चर्स एंड एड्रेसस, (ए, के. सीम्स अनु.), मैकमिलन प्रकाशन, मद्रास, पृ 146.

ठाकुर, र. (ठाकुर रवीन्द्रनाथ, विश्व भारती पत्रिका, साहित्य और सस्कृति संबंधी हिन्दी त्रैमासिक (1970), खण्ड 10 अंक 4, हिन्दी भवन, शांतिनिकेतन, बंगाल---वही, पृ. 86.

खानोलकर, गं.दं. (1961) रवीन्द्रनाथ जीवन कथा, वीनस प्रकाशन, पुणे.

ठाकुर, श्री. र. (1930) रूस की चिट्ठी, (ध. जैन अनु.), विशाल भारतपुस्तकालय, कलकत्ता, पृ.1-2.

ठाकुर, श्री. र. (1930) रूस की चिट्ठी (भ्रमण कहानी), (ध. जैन अनु.), विशाल भारत पुस्तकालय, कलकत्ता, पृ. 4.